Name - DR. SUSHMITA.
Department of History.
class - B.A (Prog) II sem.
No. of PDF. page - 34.
Name of the file - Gupta period.

Scanned with CamScanner

गुप्तकालीन भारत 'इतिहास का स्वर्ण-युग'

इतिहास में 'स्वर्ण-युग' से तात्पर्य उस युग से होता है जो इतिहास के अन्य युगों से अधिक गौरवपूर्ण हो। जिसमें देश सर्वाधिक सुसंगठित, शक्तिशाली व समृद्ध हो। वास्तव में इस युग में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक आदि सभी दृष्टियों से पूर्ण विकास होना चाहिए, जनता को भौतिक, आध्यात्मिक, नैतिक व मानसिक विकास के अवसर प्राप्त होने चाहिए तथा कला व साहित्य की दृष्टि से चरमोत्कर्ष प्राप्त होने चाहिए। इतना ही नहीं उस काल में राष्ट्र के गौरव व प्रतिष्ठा का इतना विकास होना चाहिए कि विदेशों में वह आदर व सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगे।

भारतीय इतिहास में गुप्त साम्राज्य के काल को स्वर्ण-युग के नाम से पुकारा गया है।

(1) राजनैतिक जीवन —

(a) राजनैतिक एकता का युग — अशोक की मृत्यु के पश्चात उनका विशाल साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। जो कुछ शक्ति बची थी वह विदेशी आक्रमणकारियों ने नष्ट कर डाली। गुप्त साम्राज्य का उदय एक विशाल शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में हुआ। गुप्तकालीन सम्राटों ने छोटे-छोटे राज्यों पर विजय प्राप्त करके देश को एकता के सूत्र में बाँध दिया। इतना ही नहीं विदेशी शक, हूण तथा कुषाण जातियों को पराजित किया। इस प्रकार संपूर्ण उत्तरी भारत में राजनैतिक

एकता स्थापित हुई। इस युग का यह महान कार्य था।

इस युग की महानता का कारण परम साहसी वीर तथा कुशल प्रशासक गुप्त सम्राटों का सिंहासनारूढ़ होना था। समुद्रगुप्त की विजय वाहिनियों ने गौरवपूर्ण विजय प्राप्त की। अनेक राज्य उससे इतने भयभीत हुए कि बिना युद्ध के ही उन्होंने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार कर ली। दूरस्थ प्रदेशों को अपने शासन का अंग न बनाकर उसने अपनी राजनीतिक कुशलता का परिचय दिया। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों को और स्कन्दगुप्त ने हूणों को पराजित किया और अश्वमेध यज्ञ किए। इस प्रकार यह युग महान सम्राटों का युग कहलाता है।

(ए) आदर्श शासन प्रबन्ध — गुप्तकालीन युग कल्याणकारी राज्य का युग था। शासन का आदर्श जनहित के कार्य करना था। दण्ड व्यवस्था उदार थी फिर भी अपराध बहुत कम होते थे। जनता सुखी थी और शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करती थी। मार्ग सुरक्षित थे। यात्रियों की सुख-सुविधा के सभी प्रबन्ध किए गए थे। जनता राजा को प्यार करती थी और राजा जनहित को सर्वोपरि मानता था। इस प्रकार गुप्त काल वर्तमान काल के किसी भी कल्याणकारी राज्य से उत्तम अवस्था में था

[illegible] सामाजिक जीवन

जाति प्रथा :- तत्कालीन सामाजिक-जीवन में स्थिरता आ गई थी। जाति-प्रथा को पुनः प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त हो गया था। ब्राह्मणों का बहुत आदर होता था। सभी जाति के लोग कर्तव्य की भावना से कार्य करते थे। शूद्रों की दशा अच्छी न थी। अन्तर्जातीय विवाह प्रचलित थे अतः जातीय संकीर्णता विद्यमान न थी।

(घ) विवाह तथा पारिवारिक जीवन -

गुप्त कालीन साहित्य के आधार पर कहा जा सकता है कि इस समय काल में अन्तर्जातीय विवाह पद्धति प्रचलित थी। गुप्त शासकों ने वाकाटक ब्राह्मण परिवारों से ~~वि~~ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए थे। विधवा विवाह प्रथा भी प्रचलित थी क्योंकि चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने अपनी विधवा भाभी से विवाह कर लिया था। सम्भवतः बेमेल विवाह भी होते होंगे क्योंकि कुमार गुप्त ने वृद्धावस्था में एक नवयुवती से विवाह किया था।

इस काल में संयुक्त परिवार प्रणाली प्रचलित थी जिसमें परिवार का वयोवृद्ध व्यक्ति मुखिया होता था। उसकी मृत्यु के उपरान्त बड़ा पुत्र मुखिया बन जाता था। परिवार के सभी सदस्य परिवार के मुखिया के आदेशों का पालन करते थे।

(c) स्त्रियों की दशा — गुप्तकाल में स्त्रियों की दशा बहुत उन्नत थी। उनकी शिक्षा का पूर्ण प्रबन्ध था। स्त्रियाँ शासन के कार्यों में परामर्श देती थीं। आर० सी० मजुमदार का कथन है कि गुप्त काल में सम्राज्ञी का परामर्श बड़ा महत्वपूर्ण होता था। उस काल में स्त्रियाँ सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में पुरुषों के साथ भाग लेती थीं। पर्दा प्रथा प्रचलित न थी।

(d) भोजन आदि — अधिकांश लोग शाकाहारी थे। माँस, मदिरा आदि का उपयोग चाण्डाल लोग करते थे। फाहियान ने लिखा है कि साधारण समाज में प्याज व लहसुन तक न खाया जाता था। यह बात उस काल के सात्विक जीवन का परिचय देती है।

(e) नैतिक जीवन — फाहियान का कथन है कि सामाजिक जीवन नैतिकता पूर्ण था। साधारणतः लोग सत्य बोलते थे और उच्च आदर्शों की प्राप्ति के लिए प्रयास करते थे। इस प्रकार व्यवहारिक जीवन में ईमानदारी का व्यवहार होता था। धोखा देना, चोरी करना, असत्य सम्भाषण हेय दृष्टि से देखा जाता था। अतिथि का सत्कार होता था।

(3) धार्मिक जीवन

(A) हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान — अधिकांश गुप्त शासक हिन्दू धर्म के अनुयायी थे और उन्होंने

हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान के लिए, विशेष प्रयास किए। इस कारण हिन्दू मान्यताओं को प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ। हिन्दू धर्म शास्त्रों का संकलन हुआ। विभिन्न हिन्दू सम्प्रदायों के देवताओं की प्रतिष्ठा हुई। मूर्ति पूजा, तीर्थ यात्रा तथा व्रत आदि की महिमा पुनः स्थापित हुई। इस प्रकार गुप्तकाल में प्राचीन हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान हुआ और उसमें धीरे-धीरे बौद्ध व जैन धर्म इस विशाल हिन्दू धर्म के अंग बनते दिखाई देने लगे।

(4) धार्मिक सहिष्णुता — यद्यपि हिन्दू धर्म की विशेष उन्नति हुई किन्तु यह युग धार्मिक सहिष्णुता का युग था। देश में बौद्ध व जैन आदि धर्मों को भी पूर्ण मान्यता प्राप्त थी। यह युग बौद्ध धर्म के ह्रास का काल है किन्तु गुप्त सम्राटों ने बौद्ध धर्म के प्रति उपेक्षा भाव प्रदर्शित नहीं किया। बौद्ध मठों व विहारों को सरकारी सहायता प्राप्त होती रही। सरकारी पदों पर नियुक्तियों में धार्मिक भेद-भाव नहीं होता था। यह इस बात से सिद्ध होता है कि चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का सेनापति बौद्ध था।

(5) आर्थिक जीवन —

(1) कृषि की उन्नति — भारत एक कृषि प्रधान देश है और भारत की आर्थिक समृद्धि कृषि की

की उन्नति पर निर्भर करती है अतः गुप्त सम्राटों ने कृषि की उन्नति की ओर विशेष ध्यान दिया। सिंचाई की विशेष प्रबन्ध किया गया। किसानों को अनेक सुविधाएँ दी गई।

(B) उद्योगों का विकास – एक ओर ग्रामों के कुटीर उद्योग धन्धों के विकास की योजनाएं बनाई गई और दूसरी ओर अन्य उद्योगों को प्रोत्साहन दिया गया। फाहियान लिखता है कि देश में सोने - चाँदी व मणि की मूर्तियाँ बनाई जाती थीं। हाथी दाँत का सुन्दर काम होता था। इतना ही नहीं देश में लोहे - स्तम्भ व समुद्री पोतों का निर्माण भी होता था।

(C) व्यापार

(i) आन्तरिक व्यापार – आन्तरिक व्यापार बहुत उन्नत था। यह स्थल व जल दोनों मार्गों से होता था। जल मार्ग के लिए नदियों का उपयोग किया जाता था। देश में स्थापित शान्ति के कारण व्यापारी निर्भय होकर व्यापार करते थे। इन व्यापारियों की अपनी - अपनी श्रेणियाँ बनी हुई थीं।

(ii) विदेशी व्यापार – गुप्त की समृद्धि का परिचय विदेशी व्यापार से मिलता है। अनेक देशों से व्यापार होता था। ताम्रलिप्त बंगाल का सबसे प्रसिद्ध बन्दरगाह था। इसी से चीन ब्रह्मदेश तथा पूर्वी द्वीप समूह से भारत का व्यापार

होता था। पश्चिमी तट पर भड़ौंच प्रसिद्ध बन्दरगाह था जिसके द्वारा पाश्चात्य देशों और विशेषकर रोम साम्राज्य से व्यापार होता था।

(ii) स्वर्ण मुद्राएँ — इस काल में स्वर्ण मुद्राएँ चलती थीं जो भारत के 'स्वर्ण युग' का प्रतीक समझी जा सकती हैं। लोग सोना, चाँदी मँगाया जाता था।

(4) साहित्य की समृद्धि

मौर्य काल के पश्चात् प्राकृत भाषा का स्थान धीरे-धीरे संस्कृत ने लेना प्रारंभ कर दिया और गुप्त काल में वह राजभाषा के पद पर आरूढ़ हो गई। इस काल में संस्कृत साहित्य की जो समृद्धि हुई उसकी झलक नीचे दी गई है —

(A) संस्कृत साहित्य — हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान के साथ-साथ संस्कृत भाषा का भी उत्थान हुआ। साहित्यकारों ने संस्कृत के माध्यम से साहित्य रचना की। अनेक विश्व-विख्यात रचनाएँ इसी काल में लिखी गईं। इस युग में अनेक विद्वान् हुए जिनमें से कुछ प्रमुख विद्वान व उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ निम्नलिखित हैं :-

(1) कालीदास — कुमारसम्भव तथा रघुवंश दो महाकाव्य, शकुन्तला नाटक, मेघदूत तथा ऋतु संहार दो गीत काव्य।

✓ विशाखदत्त — नाटककार, मुद्राराक्षस तथा देवीचन्द्रगुप्तम् नाटक।

✓ (e) भारवि — किरातार्जुनीय।

✓ शूद्रक — मृच्छकटिक नाटक।

✓ (f) हरिषेण — समुद्रगुप्त के दरबारी कवि, इलाहाबाद स्तम्भ की प्रशस्ति लिखी है।

(6) सुबन्धु — वासवदत्ता काव्य का लेखक।

(B) धार्मिक साहित्य — हिन्दू धर्म से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थों की रचना हुई। मनुस्मृति, महाभारत, पुराण तथा रामायण के वर्तमान रूप इस काल की देन है।

बौद्ध धर्म व जैन धर्म में भी अनेक साहित्य की रचना की गई। बौद्ध विद्वानों में आचार्य मैत्रिय, कुमारजीव, चन्द्रकीर्ति तथा धर्मपाल आदि सम्मिलित थे जबकि जैन विद्वानों में चन्द्रमणि तथा सिद्धसेन इस युग में हुए।

(6) विज्ञान की उन्नति — यह युग विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति के लिए विशेष प्रसिद्ध है। ज्योतिष, गणित व आयुर्वेद के क्षेत्र में अनेक विद्वानों ने अनेक शोध कार्य किए।

(A) ज्योतिष — आर्यभट्ट, वराहमिहिर तथा ब्रह्मगुप्त इस काल के प्रसिद्ध ज्योतिष व गणितज्ञ

हुए हैं। आर्यभट्ट ने संसार में सबसे पहले पता लगाया कि पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी पर सूर्य के चारों ओर घूमती है। सूर्य व चन्द्रग्रहण का वैज्ञानिक विश्लेषण भी आर्यभट्ट ने ही सबसे पहले संसार के सामने रखा। वराहमिहिर ने अपने अनेक ग्रंथों में खगोल विद्या, भूगोल तथा वनस्पतिशास्त्र का विवेचन किया। इसके अतिरिक्त ब्रह्मगुप्त ने पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

(B) आयुर्वेद — आयुर्वेद के क्षेत्र में भी विशेष उन्नति हुई। नागार्जुन ने रस चिकित्सा की रचना की। वाग्भट्ट भी इसी समय का प्रसिद्ध चिकित्सक था। चरक व सुश्रुत ने वैद्यशास्त्रों की रचना की जो आज तक प्रसिद्ध हैं।

(7) कलाओं की उन्नति —

(A) चित्रकला — चित्रकला में कितनी उन्नति हुई इसकी साक्षी अजन्ता व एलोरा की गुफाओं से मिलती है। ये चित्रकला के उत्कृष्ट नमूने हैं। चौदह-पन्द्रह सौ वर्ष व्यतीत हो जाने के पश्चात भी अंकित चित्रों की पॉलिश खराब नहीं हुई है। अलंकारिक दृष्टि से, मूर्तियों की सजीवता की दृष्टि से तथा वर्णनात्मक दृश्यों की दृष्टि से ये चित्र अतिसजीव लगते हैं।